डॉ0 नरेन्द्र प्रकाश राय
उपाचार्य, हिन्दी विभाग
लाल बहादुर शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय
मुगलसराय-चंदौली

दूरभाष - 9415388567
रविनगर - मुगलसराय
चंदौली

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि निशा राय, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर से पी0-एच0 डी0 उपाधि हेतु "जयशंकर प्रसाद के कथा साहित्य में जीवन मूल्यों का अनुशीलन" शीर्षक पर शोध मेरे निर्देशन में पूर्ण किया है।

मेरे जानकारी व विश्वास के अनुरूप यह शोध ग्रन्थ शोध छात्रा का मौलिक कार्य है, जिसमें चयन, प्रतिपादन एवं निष्कर्ष की दृष्टि से शोध प्रबन्ध परिपूर्ण है।

निशा राय अपने चरित्र एवं आचरण से पी0-एच0 डी0 उपाधि के लिए सर्वथा योग्य हैं।

Forwarded

M. Singh
Principal
Lal Bahadur Shastri Post Graduate Colleg
Mughalsarai, Chandauli

डॉ0 नरेन्द्र प्रकाश राय
उपाचार्य, हिन्दी विभाग
लाल बहादुर शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय
मुगलसराय-चंदौली

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

भूमिका - I - III

आभार -

प्रथम अध्याय

जीवन मूल्यः स्वरूप और साहित्य में उसका महत्व तथा विकास - 01 - 60

1- मूल्य 2- साहित्य और यथार्थ 3- साहित्य और दर्शन 4- साहित्य और नीति 5- साहित्य और राष्ट्रीयता 6- साहित्य और संस्कृति 7- साहित्य और जीवन 8- साहित्य एक युग चेतना 9- मानववाद 10- साहित्य और समाज 11- काव्य में सत्य का स्वरूप 12- सामाजिक दायित्व 13- काव्य की प्रेरक शक्तियाँ।

द्वितीय अध्याय

प्रसाद के कथा साहित्य का आलोचनात्मक परिचय - 61 - 150

1- कहानी संग्रहों का परिचय 2- कहानियों का कथानक 3- कहानियों की कथावस्तु 4- कहानियों में चरित्र चित्रण -क- नारी पात्र -ख- पुरूष पात्र 5- कहानियों की शैली 6- कहानियों का देशकाल तथा वातावरण 7- कहानियों का उद्देश्य 8- कंकाल का कथानक 9- तितली का कथानक 10- इरावती का कथानक 11- उपन्यासों (कंकाल, तितली, इरावती) की कथावस्तु 12- उपन्यासों में चरित्र-चित्रण 13- उपन्यासों की शैली 14- उपन्यासों का देशकाल या वातावरण 15- उपन्यासों के उद्देश्य।

<u>तृतीय अध्याय</u> पृष्ठ संख्या

प्रसाद के कहानियों में जीवन मूल्य - 151 - 217

1- प्रसाद की कहानी संग्रहों - 'छाया', 'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप' , 'आँधी', 'इन्द्रजाल' में संकलित सम्पूर्ण कहानियों में उपस्थित जीवन मूल्यों का विवेचन।

<u>चतुर्थ अध्याय</u>

जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में जीवन मूल्य - 218 - 296

1- भूमिका 2- कंकाल उपन्यास में जीवन मूल्य 3- तितली उपन्यास में जीवन मूल्य 4- इरावती उपन्यास में जीवन मूल्य।

<u>पंचम अध्याय</u>

प्रसाद के कथा साहित्य में जीवन-मूल्यों के विविध रूप - 297 - 338

1- प्रसाद के कहानी संग्रहों - 'छाया', 'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप', 'आँधी', 'इन्द्रजाल', में संग्रहित सम्पूर्ण कहानियों तथा उनके उपन्यासों 'कंकाल', 'तितली', 'इरावती' में उपस्थित जीवन मूल्यों के विविध रूपों का सम्यक विश्लेषण।

<u>षष्ठ अध्याय</u>

उपसंहार - 339 - 362

परिशिष्ट -

1- **363 - 366**

2- **367 - 369**

भूमिका

महाकवि जयशंकर प्रसाद बहुमुखी, प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार थे। उनकी सारस्वत साधना में काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानियाँ, निबन्ध आदि साहित्य विधायें आती हैं। उनकी सारस्वत साधना हिन्दी साहित्य की जाज्वल्य नक्षत्र हैं। उन्होंने साहित्य की जिन विधाओं पर कलम चलायी है वे निश्चय ही हिन्दी साहित्य की गौरवमयी निधि हैं। वे एक ऐसे साहित्यकार थे जो अपनी सांस्कृतिक और दार्शनिक चेतना के द्वारा मानव मूल्यों की स्थापना करके समाज में फैली कुरीतियों, विसंगतियों और विकृतियों को दूर करके मानव मात्र में एक नयी संचेतना और जागृति का स्वर भरा है।

प्रसाद जी के काव्यों और नाटकों पर अनेक गवेषणात्मक अध्ययन हुए हैं किन्तु उनकी अपेक्षा उनके कथा-साहित्य पर बहुत कम प्रकाश डाला गया है। वे मानव मूल्यों के सजग प्रहरी थे। मानव मूल्य उनके काव्य और नाटक में ही नहीं बल्कि कथा साहित्य में भी उजागर हुए हैं। उनके काव्य और नाटक में जहाँ भारतीय जीवन का अतीत गौरव चित्रित है वहीं एक आदर्शवादी साहित्यकार होने के कारण उनमें मानव-मूल्यों का विशेष निर्वहण हुआ है, किन्तु उनका कथा साहित्य प्रायः भारतीय जीवन के वर्तमान सामाजिक व्यवस्था से सम्बद्ध है। अतएव उनका धरातल यथार्थ होते हुए भी उन मानव मूल्यों को विश्लेषित करते हैं, जो मानव को मानवता के उच्चतम शिखर पर पहुँचाकर उन्हें उदात्त बनाते हैं। सच्चा साहित्यकार अपने साहित्य का लक्ष्य मनुष्य मात्र को मानता है और अपनी रचनाओं के माध्यम से विकृत होती हुई मनुष्यता का चित्रित करते हुए उसे मानवीय गुणों से पुनर्स्थापित करता है। साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं होता है, वरन् जीवन को समुन्नत बनाने के लिए प्रेरणाप्रद होता है। कथा-साहित्य के अन्तर्गत लेखक केवल घटनाओं और चरित्रों का आकलन ही नहीं करता बल्कि घटनाओं और चरित्रों के समन्वयन से वह उन मानव मूल्यों को भी ध्वनित करता है जो मानव जीवन के लिए उपयोगी ही नहीं वरन् अनिवार्य भी हैं। मनुष्य में सद् और असद् दोनों प्रवृत्तियाँ होती हैं और वह असद् को दबाकर सद् को

जागृत करता है और मनुष्य को सच्चे अर्थों में सृष्टि के अमर पुष्प के रूप में विकसित करता है।

प्रसाद जी के कथा साहित्य में, कहानी संग्रह-'छाया', 'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप', 'आँधी' और 'इन्द्रजाल' तथा उपन्यासों में- 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' (अधूरा) है। जो हमारी सामाजिक राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक आदि को चित्रित करते हुए मानव-मूल्यों के धरातल पर उन्हें विश्लेषित करती है। मनुष्य में यदि मानवीय गुण नहीं है, उदात्त भावनायें नहीं है और सुसंस्कृत विचार नहीं है तो वह मनुष्य होने का अधिकारी नहीं है। प्रसाद की अन्तर्दृष्टि के केन्द्र में यही तथ्य मुखरित है। अतः हमने अपने शोध प्रबन्ध 'जयशंकर प्रसाद के कथा साहित्य में जीवन मूल्यों का अनुशीलन' के अन्तर्गत सभी मानव मूल्यों को रेखांकित करने का लघु प्रयास किया है जो मनुष्यता के सम्बल हैं।

इसके लिए हमने अपने सम्पूर्ण शोध प्रबन्ध को छः अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय : ''जीवन मूल्यः स्वरूप और साहित्य में उसका महत्व तथा विकास'' में मूल्य, साहित्य और यथार्थ, साहित्य और दर्शन, साहित्य और नीति, साहित्य और राष्ट्रीयता, साहित्य और संस्कृति, साहित्य और जीवन, साहित्य एक युग चेतना, मानववाद, साहित्य और समाज, काव्य में सत्य का स्वरूप, सामाजिक दायित्व, काव्य की प्रेरक शक्तियाँ का विवेचन-विश्लेषण किया गया है।

द्वितीय अध्याय : ''प्रसाद के कथा -साहित्य का आलोचनात्मक परिचय'' के अन्तर्गत कहानी संग्रह का परिचय कहानियों का कथानक, कहानियों की कथावस्तु, कहानियों में चरित्र चित्रण के अन्तर्गत नारी पात्र तथा पुरूष के बारे में जानकारी, कहानियों की शैली, कहानियों का देशकाल तथा वातावरण, कहानियों का उद्देश्य तथा उपन्यासों में कंकाल का कथानक, तितली का कथानक, इरावती का कथानक, उनके उपन्यासों की कथावस्तु, चरित्र चित्रण, शैली, देशकाल या वातावरण, उद्देश्य का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय : ''प्रसाद की कहानियों में जीवन मूल्य'' के अन्तर्गत् प्रसाद की कहानी संग्रह-'छाया', 'प्रतिध्वनि' 'आकाशदीप' 'आँधी' और 'इन्द्रजाल' की सम्पूर्ण कहानियों में जो जीवन मूल्य है उन्हीं पर सम्यक एवं सविस्तार विवेचन विश्लेषण किया है।

चतुर्थ अध्याय : 'जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में जीवन मूल्य के अन्तर्गत, कंकाल उपन्यास में जीवन मूल्य, तितली उपन्यास में जीवन मूल्य तथा इरावती उपन्यास में जीवन मूल्यों की विवेचना की गई है।

पंचम अध्याय : ''प्रसाद के कथा साहित्य में जीवन मूल्यों के विविध रूप'' के अन्तर्गत प्रसाद की कहानी संग्रहों 'छाया', 'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप', 'आँधी' और 'इन्द्रजाल' में संग्रहित सम्पूर्ण कहानियों तथा उनके उपन्यास, कंकाल, 'तितली, इरावती' में उपास्थापित जीवन मूल्यों का सम्यक विवेचन विश्लेषण किया गया है।

षष्ठ अध्याय : अन्तिम अध्याय है, यह अध्याय हमारे शोध प्रबन्ध का निष्कर्ष है। इसके अन्तर्गत हमने उन मौलिक उद्भावनाओं को प्रस्तुत किया है, जो प्रसाद जी के कथा साहित्य में मानव-मूल्यों की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं।

परिशिष्ट : 1 में हमने जयशंकर प्रसाद के सम्पूर्ण साहित्य की सूची दी है।

परिशिष्ट : 2 में हमने उन ग्रन्थों की सूची दी है जिनका हमारे शोध प्रबन्ध में अवतरण रूप में उद्धृत किया गया है।

आभार

विद्यार्थी जीवन से ही शोध करने की जिज्ञासा रही। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के निर्देशक डा0 नरेन्द्र प्रकाश राय, उपाचार्य हिन्दी विभाग लाल बहादुर शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय मुगल सराय, चन्दौली ने अपने निर्देशन में कार्य करने का सुअवसर प्रदान कर इस जिज्ञासा को मूर्त रूप दिया। आपने अमूल्य योगदान देकर हमें कृतार्थ किया इस कार्य के लिए हम सदैव हृदय से आभारी रहेगी।

हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध समालोचक डॉ0 रामप्यारे तिवारी ने अपने निजी पुस्तकालय से शोध सम्बन्धी पुस्तकों को उपलब्ध कराकर तथा मेरे शोध प्रबन्ध लेखन में उचित परामर्श देकर जो अपनी कृपा दृष्टि से अप्यायित किया है उसके लिए मैं जीवन-पर्यन्त ऋणी रहूँगी, यदि उनका मार्ग दर्शन न मिलता तो सम्भवतः यह मेरा सारस्वत यज्ञ पूर्ण नहीं हो पाता, ऐसे गुरू को पाकर मैं धन्य हूँ और मुझे पूर्ण विश्वास है कि उनका स्नेह, आशीर्वाद निरन्तर मिलता रहेगा।

दी0 द0 उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के डॉ0 रामदरस राम, डॉ0 अनिल राय, डॉ0 विमलेश मिश्रा के प्रति कृतज्ञता अर्पित करती हूँ जिन्होंने बहुमूल्य समय देकर सुझाव प्रदान किया।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के पदाधिकारियों के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धा प्रकट करती हूँ जिन्होंने अपने पुस्तकालय से पुस्तकें उपलब्ध कराकर मुझे सहयोग दिया।

इसी क्रम में अपने परम् पूज्य दादा जी श्री रामजी राय, दादी जी श्रीमती बदामी देवी तथा परम् पूज्य पिता श्री डॉ0 दीनानाथ राय प्रधानाचार्य, बी0 आर0 के0 इण्टर कालेज वलीदपुर तथा माताजी, श्रीमती गीता राय ने जो हमारे शोध लेखन में प्रोत्साहन दिया है वह निश्चय ही जीवन पर्यन्त अविस्मरणीय रहेगा। इस अवसर पर अपने पिता जो 'भारतीय इतिहास' के विद्वान है साहित्य के क्षेत्र में उनकी गहरी पैठ से मैं अभिभूत हूँ, उन्होंने शोध सम्बन्धी सामग्री के चयन तथा उनके विवेचन विश्लेषण में

अपने अनुभवों से सहायता पहुँचायी है उसे भुला पाना सम्भव नहीं है। इस अवसर पर अपने माता-पिता को स्मरण करते हुए अपना प्रणाम निवेदित करती हूँ।

पितृ तुल्य आदरणीय श्वसुर श्री चन्द्रदेव राय और मातृ तुल्य सास श्रीमती सिद्धेश्वरी राय के चरणों में अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित करती हूँ। इन दोनों के आशीर्वाद से ही मेरा शोध प्रबन्ध पूर्ण हो सका है। इसी प्रकार का आशीर्वाद मुझे भविष्य में भी मिलता रहेगा ऐसा पूर्ण विश्वास है। मेरे पूज्य पतिदेव श्री अनुराग राय ने जो प्रेरणा, प्रोत्साहन और सहयोग दिया है उसके लिए उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना एक औपचारिकता ही होगी।

मैं मौसा श्री हरिद्वार राय वरिष्ठ एड्वोकेट दीवानी न्यायालय मऊ एवं मौसी श्रीमती अनिता राय की हृदय से आभारी हूँ जिनके अथक सहयोग एवं आशीर्वाद से प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को सफलता पूर्वक सम्पन्न कर पायी। इस अवसर पर अपने मातुल श्री डॉ0 रामकृपाल राय प्रधानाचार्य सर्वोदय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कौड़ीराम को सादर स्मरण करती हूँ जिन्होंने निरन्तर मेरे शोध प्रबन्ध के लेखन प्रगति पर जिज्ञासा प्रकट करते रहे हैं साथ ही पाण्डुलिपियों में भी सुधार करते रहे हैं। इसी क्रम में अपने बहनों अर्चना राय, श्वेता राय तथा अनुज विनीत कुमार राय, पवन कुमार राय को अपना स्नेह आशीर्वाद देती हूँ जिन्होंने मेरे गृहकार्य के दायित्वों के भार को अपने ऊपर लेकर मेरे शोध कार्य के मार्ग में अपूर्व योगदान किया है एवं समस्त शुभचिन्तकों को स्नेह तथा सहयोग के लिए हृदय से धन्यवाद देती हूँ। मैं श्री लक्ष्मण चौबे शिक्षक वी0 आर0 के0 इण्टर कालेज वलीदपुर मऊ के आभारी हूँ जिनके प्रेरणा से शोध प्रबन्ध पूर्ण हुआ।

अन्त में मैं उन सभी विद्वानों को सादर नमन् करती हूँ जिनके ग्रन्थों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में मेरे शोध प्रबन्ध लेखन में सहायता मिली।

शोधार्थी

निशा राय

निशा राय